

श्रीः  
श्रीमते रामानुजाय नमः  
श्रीमते निगमान्तमहादेशिकाय नमः

श्री अश्वरीष कृतं  
॥ श्री महासुदर्शनस्तोत्रम् ॥

*This document has been prepared by*

*Sunder Kidāmbi*

*with the blessings of*

श्री रङ्गरामानुज महादेशिकन्

*His Holiness śrīmad āṇḍavan śrīraṅgam*

श्रीः

श्रीमते रामानुजाय नमः

श्रीमते निगमान्तमहादेशिकाय नमः

## ॥ श्री महासुदर्शनस्तोत्रम् ॥

अश्वरीष उवाच

एरमग्निर्भगरान् सूर्यस्तुं सोमो ज्योतिषां पतिः।  
एरमापस्तुं क्षितिर्र्योम रायुर्मात्रेन्द्रियाणि च ॥ 1 ॥

सुदर्शन नमस्तुभ्यं सहस्राराच्यतप्रिय।  
सर्वास्त्रघातिन् रिप्राय श्चस्ति भूया इडम्पते ॥ 2 ॥

एरं धर्मस्तुमृतं सत्यं एरं यज्जोह्विलयज्जुडुकु।  
एरं लोकपालः सर्वात्मा एरं तेजः पौरुषं परम् ॥ 3 ॥

नमः सुनाभाखिलधर्मसेतरे  
ह्यधर्मशीलासुरधूमकेतरे।  
त्रैलोक्य गोपाय रिशुद्धरर्चसे  
मनोजरायाद्भुतकर्मणे गृणे ॥ 4 ॥

एरतेजसा धर्ममयेन संहृतं  
तमः प्रकाशश्च धृतो महात्मनाम्।  
दुरत्ययस्ते महिमा गिरां पते  
एरद्रुपमेतं सदसं पराररम् ॥ 5 ॥

यदा रिस्सृष्टस्तुमनञ्जनेन रै  
बलं परिष्टोहजित दैत्यदानरम्।  
बाहुदरोर्भङ्घिशिरोधराणि  
बृकणन्नजस्रं प्रधाने रिराजसे ॥ 6 ॥

স ৎরং জগত্ৰাণ খলপ্রহাণযে  
নিরুপিতঃ সর্সহো গদাভূতা।  
রিপ্রস্য চাস্মৎকুলদৈরহেতরে  
রিধেহি ভদ্রং তদনুগ্রহো হি নঃ ॥ 7 ॥

যদ্যস্তি দত্তমিষ্টং রা স্বধর্মো রা স্ননুষ্ঠিতঃ।  
কুলং নো রিপ্রদৈরং চেৎ দ্বিজো ভরতু রিজ্জ্বরঃ ॥ 8 ॥

যদি নো ভগরান্ প্রীত একঃ সর্গুণাশ্রয়ঃ।  
সর্ভূতাঅভারেন দ্বিজো ভরতু রিজ্জ্বরঃ ॥ 9 ॥

শ্রীশুক উবাচ  
ইতি সংস্করতো রাজ্ঞো রিষুচক্রং সুদর্শনম্।  
অশাম্যৎ সর্সতো রিপ্রং প্রদহদ্ রাজযাজ্ঞয়া ॥ 10 ॥

স মুক্তোহস্মাগ্নিতাপেন দুর্সাসাঃ স্নস্তিমাংস্ততঃ।  
প্রশশংস তমুরীশং যুঞ্জানঃ পরমাশিষঃ ॥ 11 ॥

॥ শ্রী মহাসুদর্শনস্তোত্রং সমাপ্তম্ ॥